



# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

प्रसाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उपखण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 435] नई दिल्ली, मंगलबार, अक्टूबर 21, 1975/आष्टिवन 29, 1897

No. 435] NEW DELHI, TUESDAY, OCTOBER 21, 1975/ASVINA 29, 1897

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या वाली जाती है जिससे कि यह अस्तग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed  
as a separate compilation

## MINISTRY OF HOME AFFAIRS

## NOTIFICATIONS

New Delhi, the 21st October 1975

**S.O. 612(E).**—Whereas the Central Government is satisfied that it is necessary so to do in the public interest;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (5) of section 8 of the Central Sales Tax Act, 1956 (74 of 1956), and in supersession of the notification of the Government of India in the Ministry of Home Affairs No. S.O. 524, dated the 13th February, 1967 (as subsequently amended), the Central Government hereby directs that in respect of the sales made from the Union territory of Delhi on or after the 21st day of October, 1975, in the course of inter-State trade or commerce by any registered dealer having his place of business in that Union territory, of any goods to which sub-section (1) of the said section applies [other than goods specified in the First Schedule to the Delhi Sales Tax Act, 1975 (43 of 1975)], the tax payable under the said sub-section (1) shall, subject to the conditions hereinafter specified, be calculated at the rate of two per cent of the turn-over of the dealer.

## CONDITIONS

(1) The sales are made to a registered dealer having his place of business outside the Union territory of Delhi.

(2) The sales relate to goods which are proved to the satisfaction of the appropriate sales tax authority to have been received in the Union territory of Delhi by a dealer

registered in the said Union territory under the aforesaid Central Sales Tax Act (hereinafter referred to as the importing dealer), from his place of business in another State where he is registered under the sales tax law of that State in respect of such place of business, or from the place of business of his agent or principal in another State where such agent or principal is registered under the sales tax law of that State in respect of such place of business, and in respect of which the importing dealer furnishes a certificate containing the declaration in the form appended hereto that tax on the said goods has been paid or will be paid by him or his agent or his principal, as the case may be, under the sales tax law of the State wherefrom the goods were received, and which are exported by the importing dealer from the said Union territory without undergoing any processing or change in identity.

*Explanation:*—For the purpose of paragraph (2), goods shall not be deemed to have undergone any processing or change in identity if, before their export from the Union territory of Delhi, they are—

- (a) merely packed or repacked, provided such packing or repacking is not done under a trade name or mark; or
- (b) merely cleaned or sorted.

#### FORM OF CERTIFICATE

Certified that the goods sold by me in the course of inter-State trade or commerce vide Cash Memo/Bill No. .... dated ..... for Rs. .... to ..... having his place of business at \*\* ..... in ..... State and whose Registration Certificate No. under the Central Sales Tax Act, 1956 in the aforesaid State is ..... are the whole or part of the goods received by me.

\* from my

\* as an agent of ..... (give name of principal) having his

\* from my agent ..... (give name of agent) having his place of business situated at \*\* ..... in ..... (State) and in respect of such place of business.

\* I am

\* My principal aforesaid is registered in the said

\* My agent aforesaid

State of ..... vide Registration Certificate No. .... valid with effect from .....

The goods have been sold by me without undergoing any processing or change in identity after they were received by me in the Union territory of Delhi.

I also certify that tax on the above goods received by me in the Union territory of Delhi \*has been/\*will be paid by

\* me

\* my principal aforesaid under the sales tax law of

\* my agent aforesaid

..... (State) wherefrom the goods were received.

I am registered at Delhi under the Central Sales Tax Act, 1956 vide Registration Certificate No. .... valid with effect from .....

\*Strike out the entry not applicable.

\*\*Give full and complete address of the place of business in the other State.

## गृह मंत्रालय

## अधिसूचना

नई दिल्ली, 21 अक्टूबर, 1975

कांग्रेस 812(अ).—केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि लोक हित में ऐसा करना आवश्यक है :

अतः, अब, केन्द्रीय सरकार केन्द्रीय विक्रय कर अधिनियम, 1956 (1956 का 74) की धारा 8 की उपधारा (5) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और भारत सरकार के गृह मंत्रालय की अधिसूचना संख्या का० आ० 524 तारीख 13 फरवरी, 1967 (तत्पश्चात् यथा संशोधित) की अधिकान्त करते हुए, निवेश देती है कि ऐसे व्यवहारी द्वारा, जिसका कारबार का स्थान संघ राज्य क्षेत्र दिल्ली में है, अन्तर्राजीय व्यवसाय या बाणिज्य के अनुक्रम में, 21 अक्टूबर, 1975 को या उसके पश्चात्, उस संघ राज्य क्षेत्र से किए गए ऐसे माल को, जिसको उक्त धारा की उपधारा (1) लागू होती है, [जो उस माल से भिन्न है जो दिल्ली विक्रय कर अधिनियम, 1975 (1975 का 43) की प्रथम अनुमूली में विनिर्विट्ट है], विक्रयों की बाबत, उक्त उपधारा (1) के अधीन संदेय कर की संगणना, इसमें इसके पश्चात् शर्तों के अधीन रहते हुए, व्यवहारी के आवर्त के दो प्रतिशत की दर पर की जाएगी,

## शर्तें

(1) विक्रप ऐसे रजिस्ट्रीकृत व्यवहारी को किया गया है, जिसका कारबार का स्थान दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र से बाहर है।

(2) विक्रप ऐसे माल के संबंध में है, जिसके बारे में समुचित विक्रय-कर प्राधिकारी के समाधानप्रद रूप में यह सिद्ध कर किया गया है कि वह पूर्णकृत केन्द्रीय विक्रय कर अधिनियम के अधीन दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र में रजिस्ट्रीकृत किसी व्यवहारी द्वारा (जिसे इसमें इसके पश्चात् आयात करने वाला व्यवहारी कहा गया है) उक्त संघ राज्य क्षेत्र में, किसी अन्य राज्य में स्थित अपने कारबार के स्थान से जहां वह ऐसे कारबार के स्थान की बाबत उस राज्य की विक्रय कर विधि के अधीन रजिस्ट्री-कृत है, प्राप्त किया गया है या किसी अन्य राज्य में अपने अभिकर्ता या मालिक के कारबार के स्थान से, प्राप्त किया गया है जहां ऐसा अभिकर्ता या मालिक ऐसे कारबार के स्थान की बाबत उस राज्य की विक्रप कर विधि के अधीन रजिस्ट्रीकृत है, और जिसकी बाबत आयात करने वाला व्यवहारी ऐसा प्रमाणपत्र प्रस्तुत करता है, जिसमें इससे उपादान प्रलूप में यह घोषणा की गई हो कि उक्त माल पर कर उस राज्य की जिससे माल प्राप्त किया गया था, विक्रप कर विधि के अधीन यथास्थिति, उसके द्वारा या उसके अभिकर्ता या उसके मालिक द्वारा संदत्त कर दिया गया है या संदत्त कर दिया जाएगा, और जिसका किसी प्रसंस्करण या रूप परिवर्तन के बिना उक्त संघ राज्य क्षेत्र में आयात करने वाले व्यवहारी द्वारा नियति किया गया है,

स्पष्टीकरण :—पैरा (2) के प्रयोजन के लिए, उस स्थिति में यह समझा जाएगा कि माल का कोई प्रसंस्करण नहीं किया गया है या उसका रूप परिवर्तन नहीं किया गया है, यदि दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र से नियति से पूर्व, माल को—

(क) केवल पैक या पुनः पैक किया गया है, परन्तु यह तब जब कि ऐसी पैकिंग या पुनः पैकिंग किसी व्यवसाय नाम या चिन्ह के अधीन नहीं की गई है, या

(ख) केवल साफ किया गया है या छांटा गया है।

## प्रमाणपत्र का रूप

प्रमाणित किया जाता है कि अन्तर्राजीय व्यवसाय या वाणिज्य के अनुक्रम में मेरे द्वारा ..... को, जिसके राज्य में, \*\* ..... में कारबाहर का स्थान है, और केन्द्रीय विक्रय कर अधिनियम, 1956 के अधीन जिसकी रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र सं० ..... है, रोकड़ मेमों/बिल सं० के अनुसार ..... रूपयों के लिए बेचा गया माल मेरे द्वारा प्राप्त सम्पूर्ण माल है या उसका भाग है।

..... (मालिक का नाम) देते हुए.....  
अभिकर्ता के रूप में

\*मेरे अभिकर्ता..... (अभिकर्ता का नाम दें) से, जिसका कारबाहर के स्थान \* \* ..... राज्य में स्थित है, और ऐसे कारबाहर के स्थान की वाक्त

\*मैं  
\*मेरा पूर्वोक्त मालिक  
\*मेरा पूर्वोक्त अभिकर्ता } ..... राज्य में

रजिस्ट्रीकृत हूँ / है; रजिस्ट्रीकृत प्रमाणपत्र सं० ..... देखें, जो से विधि मान्य है।

माल, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र में मेरे द्वारा प्राप्त किए जाने के पश्चात्, किसी प्रसंस्करण या रूप परिवर्तन के बिना मेरे द्वारा बेचा गया है।

मैं यह भी प्रमाणित करता हूँ कि दिल्ली संघ राज्यक्षेत्र में मेरे द्वारा प्राप्त उपर्युक्त माल पर कर, ..... (राज्य) की, जहां से माल प्राप्त किया गया था, विक्रय कर विधि के अधीन

\*मेरे .....  
\*मेरे पूर्वोक्त मालिक } द्वारा संदर्भ \*कर दिया गया है  
\*मेरे पूर्वोक्त अभिकर्ता } ..... \*कर दिया जाएगा

मैं केन्द्रीय विक्रय कर अधिनियम, 1956 के अधीन दिल्ली में रजिस्ट्रीकृत हूँ (रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र सं० ..... देखें, जो से विधिमान्य है)

\*लागू न होने वाली प्रविलिट को काट दें।

\*\*अन्य राज्य में कारबाहर के स्थान का पूरा पता दें।

**S.O. 613(E).**—Whereas the Central Government is satisfied that it is necessary so to do in the public interest;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (5) of section 8 of the Central Sales Tax Act, 1956 (74 of 1956), and in supersession of the notification of the Government of India in the Ministry of Home Affairs No. SRO 2717, dated the 23rd August, 1957 (as subsequently amended) the Central Government hereby directs that in respect of the sales made from the Union territory of Delhi on or after the 21st day of October, 1975, in the course of inter-State trade or commerce by any dealer having his place of business in that Union territory, of any goods to which sub-section (1) of the said section applies [other than goods specified in the First Schedule to the Delhi Sales Tax Act, 1975 (43 of 1975)], the tax payable under the said sub-section (1) shall, subject to the conditions hereinafter specified, be calculated at the rate of two per cent on the turn-over of the dealer.

#### CONDITIONS

(1) The sales are made to a registered dealer having his place of business outside the Union territory of Delhi.

(2) The sales relate to goods which are proved to the satisfaction of the appropriate sales tax authority to have been imported into the Union territory of Delhi and are exported from that territory without undergoing any processing or change in identity and to have already been subjected to a tax under the said Act in respect of a sale in the course of inter-State trade or commerce which resulted in the import of the goods into the said Union territory.

*Explanation:*—For the purposes of paragraph (2), goods shall not be deemed to have undergone any processing or change in identity if, before their sale, in the course of inter-State trade or commerce from the Union territory of Delhi, they are—

- (a) merely packed or repacked, provided such packing or repacking is not done under a trade name or mark; or
- (b) merely cleaned or sorted.

[No. U-15034/12A/75-Delhi(ii)]

**K. C. PANDEYA, Jt. Secy.**

**का० आ० 613(भ).**—केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि लोक हित में ऐसा करना आवश्यक है :

अतः, श्रव, केन्द्रीय सरकार केन्द्रीय विक्रय कर अधिनियम, 1956 (1956 का 74) की धारा 8 की उपधारा (5) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और भारत सरकार के गृह मंत्रालय की अधिसूचना संख्या का० नि० आ० 2717 तारीख 23 अगस्त, 1957 (तपश्चात् यथा संशोधित) की अधिकान्त करते हुए, निवेश देती है कि ऐसे व्यवहारी द्वारा, जिसका कारबाहर वा स्थान संघ राज्य क्षेत्र दिल्ली में है, अन्तर्राजीय व्यवसाय या वाणिज्य के अनुक्रम में, 21 अक्टूबर, 1975 को या उसके पश्चात्, उस संघ राज्य क्षेत्र से किए गए ऐसे माल को जिसको उक्त धारा की उपधारा (1) लागू होती है, [जो उस माल से भिन्न है जो दिल्ली विक्रय कर अधिनियम, 1975 (1975 का 43) की प्रथम अनुसूची में विविदिष्ट है], विक्रयों की बाबत, उक्त उपधारा (1) के अधीन संदेय कर की संगणना, इसमें इसके पश्चात् शर्तों के अधीन रहते हुए, व्यवहारी के आवर्त के दो प्रतिशत की दर पर की जाएगी,

#### शर्त

(1) विक्रय किसी ऐसे रजिस्ट्रेशन व्यवहारी को किए गए हैं, जिसका कारबाहर का स्थान दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र से बाहर है।

(2) विक्रय ऐसे माल के मंबंध में है, जिसके बारे में समुचित विक्रय-कर प्राधिकारी के समाधानप्रद रूप में सिद्ध कर दिया गया है कि उनका शायात दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र के भीनर किया गया है और कोई प्रसंस्करण या पहचान संबंधी परिवर्तन किए जिसे उस राज्य-क्षेत्र से निर्यातित किया

गया है तथा जिस पर अन्तर्राजीय-व्यवसाय या वाणिज्य के अनुक्रम में, जो उक्त संघ राज्य क्षेत्र के भीतर माल के आयात करने के कारण दुम्भा, होने वाले विक्रय की आवश्यकता पहले ही कर अधिरोपित किया गया है।

**स्पष्टीकरण**.—पैरा (2)के प्रयोजन के लिए उस स्थिति में यह समझा जाएगा कि माल का कोई प्रसंस्करण नहीं किया गया है या उसका रूप परिवर्तन नहीं किया गया है, जबकि दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र से निर्यात से पूर्व, माल को—

- (क) केवल पैक या पुनः पैक किया गया है, परन्तु यह तब जब कि ऐसी पैकिंग या पुनः पैकिंग किसी व्यवसाय नाम या चिन्ह के प्रधीन नहीं की गई है; या
- (ख) केवल साफ किया गया है या छांटा गया है।

[सं. यू. 15034/12ए/75—दिल्ली (ii)]

के० सी० पांडेय, संयुक्त सचिव ।